कृपा निध सुंदरवर स्यामा

कृपा निध सुंदरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।।

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।।

नित नए उछव आनंद, होत किरंतन सार।
वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार।।

जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब।।

जोत उद्योत कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर।।

प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टी, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकास थें, अखंड किए सब जन।।